"" लक्ष्मी नारायण लालके " अंधाकुआ " नाटकका लोकतात्त्विक अध्ययन

: विषयकी रूपरेखा (Synopsis) :

(१) प्रथम अध्याय :---

" लोक " शब्द संबंधी भारतीय मत, व्युत्पत्ति, अर्थ, परिभाषा, "लोक" शब्दसे संबंधित पाश्चात्य मत, "तत्त्व" संबंधी भारतीय मत, "तत्त्व" संबंधी पाश्चात्य मत, लोकतत्त्व शब्दका अर्थ, परिभाषा, वर्गीकरण, लोकतत्त्वोंके अध्ययनकी आवश्यकता, लोकतत्त्वोंका साहित्यिक दृष्टिसे महत्त्व, प्रस्तुत शोध प्रबंधकी व्याप्ति।

(२) व्दितीय अध्याय :--

" अंधाकुआंकी " वस्तु, पात्र तथा शीर्षक, क्रमश: प्रथम, व्दितीय, तृतीय और चतुर्थ अंकोंके आधारपर, पात्र--पुरुष पात्र, स्त्रीपात्र, भगौती और सूकाका चरित्र चित्रण, "अंधाकुआ" शीर्षककी सार्थकता।

(३) तृतीय अध्याय :---

" अंधाकुआ" में लोकतत्त्वोंकी स्थिति---अंधाकुआ और लोकभाषा -लोकभाषासे तात्पर्य, लोकभाषाके अंतर्गत प्रतिध्वन्यात्मक (व्दित्त्वमूलक) शब्दरूप, प्रकार, सार्थक, निरर्थक, एकही शब्दकी व्दिरुक्तिवाले और विरोधमूलक शब्दरूप, अंधाकुआमें ~~तत्सम~~ तद्भाव शब्द , मुँहावरा, अर्थ, व्युत्पत्ति, मुहावरे की परंपरा, व्यापकत्व तथा विशेषताएँ। "अंधाकुआ" में आये हुए मुहावरे = सिर, आँख, जीभ, दाँत, मुँह, कान, कंधे, गर्दन , गला, छाती, दिल, कलेजा, पेट, कमर, हाथ, पैर, शारीरिक कृतिसंबंधी ,पशुपंछी संबंधी और विविध। कहावतकी व्युत्पत्ति, परिभाषा, एवं स्वरूप मुँहावरा और कहावतमें साम्य तथा भेद, अंधाकुआंकी कुछ कहावतोंके उदाहरण, आलोच्य नाटकमें अपशब्दोंका प्रयोग।

(४) <u>चतुर्थ अध्याय</u> :---

अंधाकुआँ और लोकरूढ़ि तथा लोकविश्वास, लोकतत्त्वोंके अंतर्गत लोकरूढ़िका स्थान, महत्व एवं व्यापकता, लोकरूढ़िके विशिष्ट रूप --शकुन, अपशकुन, अंधविश्वास, मंत्र-तंत्र, जादू टोना, होने टोटके, भाग्य, प्रथा, रीति-रिवाज, आशीर्वाद, विशिष्ट-नमस्कार, आशीर्वाद, विवाह, गौना।

(५) <u>पंचम अध्याय</u> :---

अंधाकुआँ और लोकउपमान (Similies)

लोकउपमानोंका मनोवैज्ञानिक आधार, लोकउपमानोंका कार्यक्षेत्र, लोक-उपमानकी व्याख्या, शिष्ट साहित्य और लोकसाहित्यमें उपमानोंका प्रयोग, लोकउपमानोंका वर्गीकरण ------

(१) प्राकृतिक। (२) पशुपक्षी वर्ग। (३) मानववर्ग तथा मानव जीवनसे संबंधित। (अंधाकुआँके ~~इन तीनोंके उदाहरण~~ संदर्भ में)

(६) <u>षष्ठम् अध्याय</u> :---

अंधाकुआँ और लोकगीत, अंधाकुआँके लोकगीत, उनका वर्गीकरण क्रमश: ऋतुगीत-कजली, क्रियागीत -चक्कीगीत, कजलीकी उत्पत्ति, अर्थ, वर्ण्यविषय, कजली लोकगीतका अर्थ, अंधाकुआँ में कजलीका प्रभाव, चक्कीगीतका अर्थ, वर्ण्य विषय नाटकके चक्कीगीतका अर्थ, अंधाकुआँमें चक्कीगीतका प्रभाव, प्रथम और द्वितीय लोकगीतकी तुलना-स्वरूप, आकार, वर्ण्यविषय, प्रभावके आधारपर।

(७) <u>सप्तम् अध्याय</u> :---

उपसंहार, निष्कर्षात्मक-विवेचन, प्रयोजन एवं सिद्धि।

-------------00000-------------